

wir dahin wirken, dass der König seinem Worte getreu bleibe, R. 2, 107, 19. GORR. 2, 113, 19 liest नृप कर्चाम st. भरत चराम. — 8) *auskundschaften* (vgl. चर): चरिता भवता के ऽत्र प्रूरा: के ऽत्र प्रवंगमा: । कीदशा: कति वा सैन्ये वानरा ये डुरासदा: ॥ R. 6, 6, 16. बलम् । मुखमुतं समासाद्य चरितं प्रथमं चरै: 7, 21.

— caus. 1) *laufen* —, *herumgehen* —, *weiden lassen*: यो (वशो) गो-  
घचीचरत् AV. 12, 4, 28. अश्वम् LĀTJ. 9, 11, 7. MBH. 14, 2100. HARIV. 786.  
चरतुर्वत्सपूयानि चारयत्तौ 3348. 3172. 3619. 3729. R. 2, 43, 33. BHĀG. P. 3, 2, 27. 29. नाभक्तं चारयेच्चारम् ausschicken MBH. 12, 2705. सर्वतो दृष्टिं  
चारयामास das Auge überallhin gehen lassen 3, 1498. R. 3, 21, 3. 30, 33.  
73, 20. 4, 51, 37. BHĀG. P. 8, 12, 17. पैदरैश्चारयन्तियं पश्यत्यात्मानमात्म-  
नि gehen lassen MBH. 14, 547. in Bewegung setzen: क्रकचैश्चारितैः  
RĀGA-TAR. 4, 653. durchwandern lassen: (तम्) चारयन्ति स्म तां पुरीम्  
R. 5, 49, 14. MBH. 12, 12663. verjagen: शक्रं च स्वराज्याच्चारयामास 12944.

— 2) *Jmd Etwas üben lassen*: तच्चैनां चारयेद्वत् M. 11, 176. 191. मनश्च-  
रति रजिन्द्र चारितं सर्वमिन्द्रियैः alles was man die Sinne thun lässt, was  
nach der gewöhnlichen Annahme die Sinne thun sollen MBH. 12, 11584.

— 3) *verkuppeln* (s. simpl. u. 6.) M. 8, 362. — 4) *sich Kunde verschaffen*  
von (acc.): चारयामास पुरुषैर्विकारं तस्य वै मुने: MBH. 3, 10030. चारये-  
द्याश्च सततं चरैः 13, 184. परबलम् 250. चारयित्वा तु तमृषिमाश्रमादभिनि-  
र्गतम् R. 1, 9, 13. 6, 6, 4. — 3) *in Zweifel ziehen* (s. u. वि) DĀTUP. 33, 71.

— desid. 1) *sich verhalten wollen*: संयत एवैतां रात्रिं चिचरिषेत् CAT.  
Br. 11, 1, 8, 4. — 2) *sich zu thun machen wollen* (geschlechtlich; s. simpl.  
u. 6.): ज्ञापया तिर इवैव चिचरिषति CAT. Br. 6, 4, 4, 19.

— intens. *schnell sich bewegen, wiederholt sich bewegen, herumstrei-  
chen, durchstreichen*: श्रोष्ठे जिह्वा चर्चरीति AV. 20, 127, 4. चर्चुर्यते, च-  
चुरीति, चर्चुरति P. 7, 4, 87. 88. 3, 1, 24 (भावगर्क्याम्). VOP. 20, 2, 10. 17.  
चर्चुर्यते रमती स्म किशोराविव चञ्चली HARIV. 3481. चर्चुर्य (gerund.) गि-  
रिमानुषु R. 4, 29, 22. चर्चुर्यन् partic. HARIV. 3602. यानि: — चर्चुर्यते स्म  
सर्वशः MBH. 1, 7910. चर्चुर्यते स्म ते वनम् HARIV. 3726. भित्ताय चर्चुर्यते  
द्विजैर्दिशः MBH. 3, 12850. चर्चुर्यते (Sch.: = गर्हितं चरति) ऽभितो लङ्का-  
म् BHATT. 18, 25. प्राप्य चर्चुर्यमाणातौ पतीयती रघूत्तमम् 4, 19. Sch.: = ग-  
र्हितमाचरती, गर्हितं पुनः पुनश्चरती sich winden und drehen um des  
Mannes Leidenschaft zu erregen.

— अति 1) *vorübergehen bei*: प्रहान्युपगतमानन्ये भगणांश्चापि दीपि-  
ता: । अतिचेतुर्वक्रगत्या युयुधश्च परस्परम् ॥ BHĀG. P. 3, 17, 14. अयोगतश्चा-  
त्यचरयोगं दिवि निशाकरः HARIV. 12790. — 2) *übertreten, sich vergehen*  
gegen Jmd —, *untreu sein dem Gatten*; mit dem (acc.): भर्तृशासनमति-  
चरसि BHĀG. P. 5, 10, 8. वचसा मनसा चैव यथा नातिचराम्यहम् (v. l. अभि<sup>०</sup>)  
N. (BOPP) 5, 19. यथा चाहं नातिचरे कथंचित्पतीन् — मनसापि ज्ञातु MBH.  
3, 15659. HARIV. 7084. पुत्रा: पितृनृत्यचरन्त्याश्चात्यचरन्त्यतीन् MBH. 12,  
8387. HARIV. 2348. R. 6, 103, 6. — Vgl. अतिचार fg. und u. अभि.

— व्यति *sich vergehen gegen Jmd*: त्वामहं न व्यतिचरे मनसापि कदा  
च न R. 6, 101, 11.

— अग्नि *fahren auf, wandeln auf*: अग्निं यदपां ह्यभिचरौव R. 7, 88, 3.  
(पृथिवी) यामुपरिष्ठदधिचरसि CAT. Br. 1, 9, 1, 8. — Vgl. अग्निचरणा.

— अनु 1) *sich entlang* —, *durchhin bewegen, durchwandern, durch-  
streichen, durchfahren*; *nachgehen, nachfahren, folgen*: यमस्य हूतो च-

रतो जनों अनु R. 10, 14, 12. AV. 7, 87, 1. पन्थाम् RV. 5, 51, 15. (पुरुषः)  
रतो ऽत्तिरित्तमनुचरति CAT. Br. 3, 1, 2, 13. 1, 2, 2, 2. त्वं भा अनु चर RV. 8, 1,  
28. — गङ्गामनु चचार (अनुच<sup>०</sup>) MBH. 1, 3889. लोकाननुचरन्सर्वान् 2, 144.  
3, 8485. 13, 1434. R. 1, 59, 19. 3, 68, 37. BHĀG. P. 3, 4, 9. 6, 5, 22. 14, 14.  
DAČAK. in BENF. Chr. 188, 23. अयिसंधानुचरित (आश्रम) R. 3, 11, 16. गोला-  
कुलानुचरित (चित्रकूट) 2, 54, 28. 3, 53, 21. 79, 40. अनुचरितं रवैः 5, 12, 22.  
शाश्वती खलु ते कीर्तिलोकाननुचरिष्यति 2, 85, 13. अयिमनुचरतीम् BHĀG.  
P. 4, 31, 22. पतिमन्वचरत् MBH. 4, 652. fgg. — 2) *zugehen auf, zustreben,  
zu erreichen suchen*: अन्वयं चरति RV. 3, 53, 7. (नद्यः) अनु योनिं देवकृतं  
चरती: 33, 4. यो मायाभिर्न्वचरन्मनीषिणः AV. 12, 1, 8. श्रौषो अथाव-  
चारिषम् aufsuchen RV. 1, 23, 23. — 3) *sich halten zu*, — *an, sich hin-  
geben*: अनु व्रतं चरसि RV. 3, 61, 1. 8, 25, 16. (नेत्रस्य पतिम्) अरिष्यतो  
अनु चरेम 4, 57, 3. AV. 12, 1, 17. भगं न हि त्वानु प्रूर चरामसि RV. 8, 50,  
5. यो वै ब्राह्मणं वा शंसमानो ऽनुचरति तत्रियं वा CAT. Br. 2, 3, 4, 6. यानु-  
चरति ग्लानितैश्चेष्टितैः willig folgen VARĀH. BRH. S. 77, 12. — 4) *sich  
verhalten, verfahren*: अरुन्धनुचरे देवम् MBH. 3, 1303. fg. अनुचरति n.  
Wandel, Begebenheit, Geschichte: यस्य किलानुचरितमुपाक्रायं BHĀG. P.  
5, 6, 10. मरुताम् 2, 8, 16. वंशानुचरितानि 3, 7, 25. श्रवतारानु<sup>०</sup> 2, 8, 17. 10,  
5. 8, 23, 30. — caus. *durchwandern* —, *durchstreichen lassen*: एवंवि-  
धान्यो देशान्गुल्मैः स्यावरज्जमैः । तस्करप्रतिषेधार्थं चौरिष्यायनुचारयेत् ॥  
M. 9, 266. — intens.: अनुष्ठुभमनु चर्चुर्यमाणमिन्द्रं नि चिक्वुः क्वयौ मनो-  
षाः eilig-zugehen auf(?) RV. 10, 124, 9. — Vgl. अनुचर.

— अतर *sich bewegen zwischen, innerhalb*: अतरहूतो न रोदसी चर-  
दाक् RV. 1, 173, 3. 8, 39, 1. ययौरुत्तर्हृश्चरत् 3, 44, 3. 53, 8. 1, 93, 10. 6, 27,  
7. AV. 11, 4, 20. 13, 1, 40. चन्द्रमा: सर्वभूतानामतश्चरति सान्निवत् MBH. 3,  
2989. स एषो ऽतश्चरते बहुधा ज्ञायमानः er vervielfältigt sich im Innern  
(vgl. simpl. u. 3, b) MUND. UP. 2, 2, 6. प्रजापतिश्चरति गर्भे अतः ist im Mut-  
terleibe VS. 31, 19.

— अप *sich vergehen*: यो यस्तेषामपचरेत्तमाचनीति वै द्विजः MBH. 12,  
9566. पितृदेवर्षिभृत्याश्च न चापचरिता मया MĀRK. P. 13, 13. — Vgl. अ-  
पचरित, अपचार fg.

— अभि 1) *sich vergehen gegen Jmd, untreu sein dem Gatten* (vgl. u.  
अति): मनसा वचसा चैव यथा नाभिचराम्यहम् MBH. 3, 2208. पतिं या ना-  
भिचरति मनोवाग्देहसंपता M. 5, 165. 9, 29. यथा नाभिचरेतां तौ (स्त्रीयुतौ)  
वियुक्तावितरेतरम् 102. यथैवाहं नाभिचरे कदाचित्पतीन्मदाहं मनसापि  
ज्ञातु MBH. 4, 457. — 2) *es Jmd anthon, bezaubern, bannen*: मा नो घो-  
रेण चरताभि धूषु RV. 10, 34, 14. AV. 5, 30, 2. अघौ वा त्वा गर्हपत्ये ऽभि-  
चेतुः 10, 1, 18. राजसूयेनज्ञानो नाभिचरितवै TBR. 1, 7, 2, 5. 1, 5, 1. प्राणम्  
2, 2, 1, 7. TS. 2, 2, 3, 2. CAT. Br. 1, 2, 1, 7. 5, 5, 14. 12, 6, 2, 1. KĀTJ. CR. 2, 4, 28.  
3, 5, 14. 22, 3, 1. 11, 24. 27. 33. 23, 5, 24. LĀTJ. 3, 5, 23. अभिचरन् JĀG. 1, 294.  
3, 289. विप्रायाभिचरन्त्या BHĀG. P. 3, 19, 13. Vgl. कृत्या, ΥΠΟΘΕΝ, ΥΠ-  
ΘΕΟΑΘ, ΟΥΠΟΘΕΑΘ. — 3) *besitzen*: सैषा हि मागधी नाम वसोस्तस्य —  
पूर्वाभिचरिता R. 1, 34, 10. Statt dessen GORR. 1, 33, 10: पूर्वमध्यासिता तेन.  
— Vgl. अभिचर fgg.

— प्रत्यभि *gegen Jmd zaubern*: प्रति तमभि चर योऽस्मान्देष्टे AV. 2,  
11, 3. न ह वै तं कश्चन स्तृणुते य एतैः प्रत्यभिचरति CĀNKB. CR. 14, 22, 22.  
— Vgl. प्रत्यभिचरणा.

— व्यभि 1) *sich feindselig gegen Jmd (acc. gen.) benehmen, sich ver-*